

## उत्तराखण्ड में वनाग्निकी घटना

### चर्चा में क्यों?

उत्तराखण्ड वन विभाग के अनुसार वर्ष 2024 में अब तक राज्य में **वनाग्निकी 477 घटनाएँ** सामने आई हैं, जिसमें 379.4 हेक्टेयर से अधिक वन भूमि को नुकसान पहुँचा है।

### मुख्य बढि:

- कषतगिरसत हुई **379.4 हेक्टेयर** भूमि में से 136.4 हेक्टेयर **गढ़वाल कषेत्र** में, **202.82 हेक्टेयर कुमाऊँ कषेत्र** में और **40.2 हेक्टेयर प्रशासनिक वन्यजीव कषेत्रों** में कषतगिरसत हुई।
- वन अधिकारियों के अनुसार वनाग्नि एक वार्षिक समस्या बन गई है और मौसम की स्थिति में बदलाव के कारण तापमान में वृद्धि हो रही है। उत्तराखण्ड में **फरवरी के मध्य में वनाग्नि** का अनुभव शुरू होता है जब **पेड़ों के सूखे पत्ते गरि जाते हैं और तापमान में वृद्धि के कारण मृदा में नमी कम हो जाती है** तथा यह जून के मध्य तक जारी रहता है।
- वर्ष 2000 से, जब राज्य उत्तर प्रदेश से अलग होकर बना, अब तक वनाग्नि से 54,800 हेक्टेयर से अधिक वन भूमि कषतगिरसत हो चुकी है।

### वनाग्नि

- इसे **बुश फायर/वेजिटेशन फायर या वनाग्नि भी कहा जाता है**, इसे किसी भी अनयंत्रित और गैर-नरिधारित दहन या प्राकृतिक स्थिति जैसे कि जंगल, घास के मैदान, कषुपभूमि (Shrubland) अथवा टुंडरा में पौधों/वनस्पतियों के जलने के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जो प्राकृतिक ईंधन का उपयोग करती है तथा पर्यावरणीय स्थितियों (जैसे- हवा तथा स्थलाकृत आदि) के आधार पर इसका प्रसार होता है।
- वनाग्नि के लिये तीन कारकों की उपस्थिति आवश्यक है और वे हैं- ईंधन, ऑक्सीजन एवं गर्मी अथवा ताप का स्रोत।

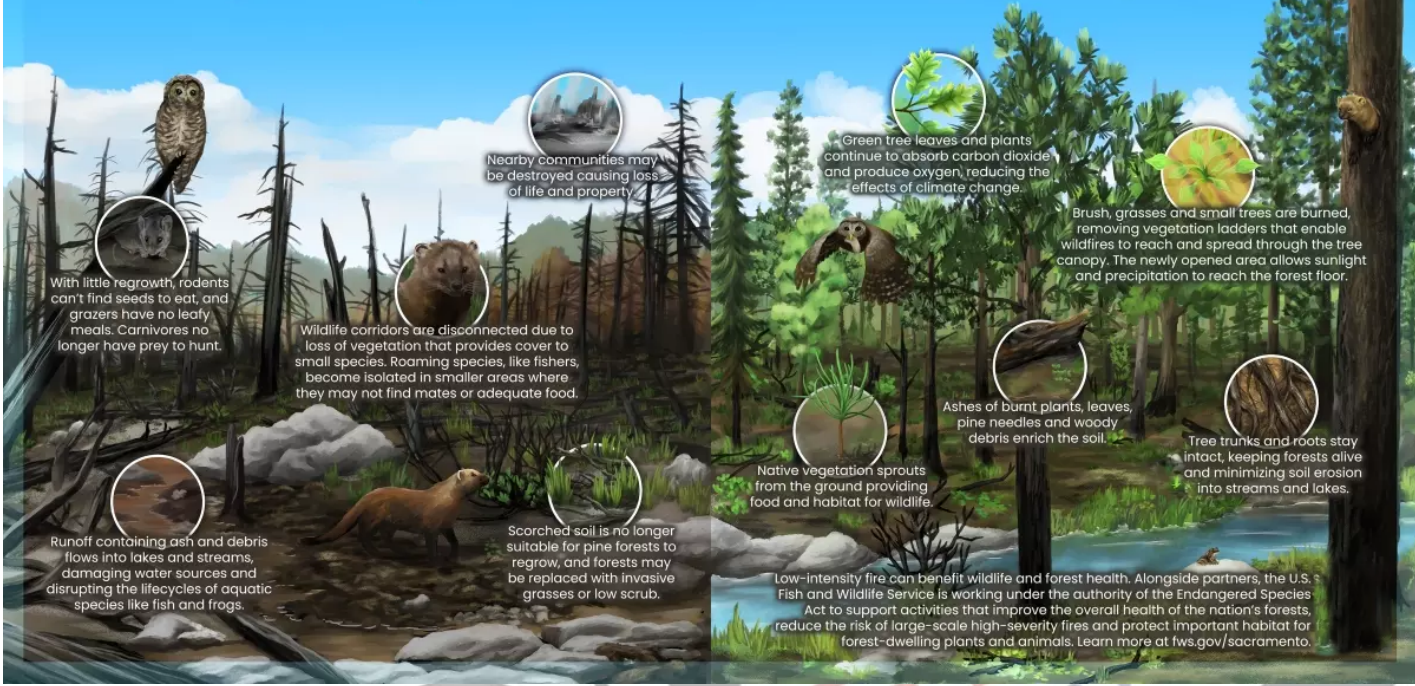
# How does fire impact forests and wildlife?

Wildfires are inevitable, but not all fire is harmful to forests. Low-intensity fires can naturally "clean" and thin the forest by removing flammable and thick vegetation on the forest floor. The result is improved habitat for wildlife, healthier soil and new growth of native plants.

It also helps reduce the risk of large-scale high-severity fires that burn through the forest—from the floor to the canopy—with intense heat. High-severity fires across large landscapes can be devastating for wildlife, habitat and surrounding communities.

## High-Severity Fire

## Low-Intensity Fire



//